तालाबन्दी के दौरान ऑफ़लाइन शिक्षा प्रक्रिया की रूपरेखा

यह रिपोर्ट ऊधम सिंह नगर टीम, उत्तराखंड के लिए मौअज़्ज़म अली ने तैयार की है

सन्दर्भ

देशभर में तालाबन्दी लागू होने के कारण, सुरक्षा की दृष्टि से देश के सभी तरह के शिक्षण संस्थानों को भी अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया है। निकट भविष्य में इनके खुलने की सम्भावना दिखाई नहीं दे रही है। इसी के मद्देनज़र अप्रैल महीने से ही अधिकतर शिक्षण संस्थानों ने विभिन्न माध्यमों से ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था की शुरुआत की है। इस ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था के अलावा विद्यार्थियों तक पहुँचने का कोई और तरीक़ा भी नज़र नहीं आ रहा था। ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा की समस्या यह है कि शहरों में स्थापित शिक्षण संस्थान या देशभर के निजी स्कूल तो किसी तरह अधिकतर विद्यार्थियों तक पहुँच पा रहे हैं और शिक्षण प्रक्रिया को जारी रख पा रहे हैं, परन्तु तमाम सामाजिक-आर्थिक कारणों से ग्रामीण इलाक़ों और छोटे शहरों में स्थापित राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले समस्त विद्यार्थियों तक पहुँचना मुमकिन नहीं हो पा रहा है।

आँकड़ों के अनुसार बात करें तो ऑनलाइन माध्यम की मदद से बहुत प्रयास करने के बाद भी सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले केवल 25 प्रतिशत विद्यार्थियों तक ही पहुँचा जा सका है। इसमें भी केवल 12 से 15 प्रतिशत बच्चे ही ऐसे हैं, जिनके साथ निरन्तर शिक्षण संवाद हो पा रहा है। इससे कक्षा एक से बारहवीं तक के विद्यार्थियों की बहुत बड़ी संख्या शिक्षा से वंचित थी। इस ख़ालीपन को भरना बहुत आवश्यक था और इसके लिए जल्द-से-जल्द कोई नया तरीक़ा या समाधान खोजना ज़रूरी हो गया था।

इसी के मद्देनज़र, उत्तराखंड राज्य के जनपद, ऊधम सिंह नगर के ज़िला कार्यालय

और शिक्षा विभाग ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन एवं अन्य संस्थाओं, जो ज़िले में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं, को एक बैठक के लिए आमंत्रित किया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर करते हुए अधिक-से-अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच बनाना

था। परन्तु अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन नैतिक एवं शैक्षिक, दोनों दृष्टियों से ऑनलाइन शिक्षा को लेकर सहमत नहीं था। व्यवस्थागत, आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी कारणों से ऑनलाइन शिक्षा प्रक्रिया द्वारा बहुत प्रयास के बाद भी केवल 20 से 25 प्रतिशत बच्चों तक ही पहुँचा जा सका था। इससे अधिक कोशिश करने के बाद भी, इसमें कुछ ही प्रतिशत वृद्धि होने की सम्भावना दिखाई दे रही थी। इस वजह से बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या शिक्षा से अछूती रह जाने का डर था। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का मानना था कि इससे सामाजिक असमानता को बढ़ावा ही मिलेगा और इस प्रक्रिया को पूरी तरह से शिक्षा भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि शिक्षा एक सामूहिक या सामाजिक प्रक्रिया है, न कि व्यक्तिगत। इसलिए फ़ाउण्डेशन ने स्वयं को इस प्रक्रिया से अलग रखने का ही विचार किया और इस बात को स्पष्ट रूप से बैठक में सबके सामने रखा भी। साधारणत: शिक्षा विभाग और ज़िला प्रशासन का शिक्षा में बेहतरी को लेकर फ़ाउण्डेशन पर बहुत विश्वास रहता है, और इस विश्वास के भी कई कारण हैं, ऐसे में उनको फ़ाउण्डेशन से इस तरह के जवाब की उम्मीद नहीं थी।

इस मुद्दे पर ज़िला प्रशासन, शिक्षा विभाग और फ़ाउण्डेशन की आपस में वार्ता का सिलसिला कई दिनों तक चला। वे चाहते थे कि हमेशा की तरह फ़ाउण्डेशन ऑनलाइन शिक्षा प्रक्रिया में भी उनकी मदद करे। तब फ़ाउण्डेशन ने ऑनलाइन शिक्षा प्रक्रिया में पार्श्व से अकादमिक सहयोग देने की बात को स्वीकारते हुए ऑफ़लाइन शिक्षा का एक नया विचार सबके सामने प्रस्तुत किया। इस विचार की मुख्य बात यह थी कि इसमें ज़िले के प्रत्येक शिक्षक और अधिकारी की सक्रिय भागीदारी निश्चित की जा सकती थी। केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और शैक्षिक सहयोग प्रणाली के अन्तर्गत कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह अकादमिक समझ को विकसित करने, स्कूल के बच्चों और उनके अभिभावकों से जुड़ाव बनाने के साथ-साथ समुदाय के अन्य लोगों से जुड़ने का भी यह अच्छा मौक़ा था। तालाबन्दी के दौरान अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर होने के बाद बहुत से लोगों द्वारा, जो पहले अपने बच्चों को स्थानीय निजी स्कूलों में पढ़ाते थे, सम्भावना जताई गई कि शिक्षक यदि समुदाय के बीच जाकर बच्चों के साथ काम करते हैं तो इसका सकारात्मक असर पड़ सकता है और सरकारी स्कूलों में नामांकन बढ़ने की सम्भावना दिखाई देती है।

आम जनमानस में सरकारी शिक्षकों और स्कूलों के बारे में नकारात्मक धारणा रहती है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती या शिक्षक बच्चों की शिक्षा के बारे में गम्भीर नहीं हैं। परन्तु जब स्कूल से जुड़ा समुदाय यह देखेगा कि सरकारी शिक्षक और विभाग मिलकर बच्चों की शिक्षा के बारे में चिन्तित हैं और वे बच्चे की शिक्षा हेतु घर-घर जाकर मेहनत कर रहे हैं, तो इसका सकारात्मक असर लोगों पर पड़ेगा और इससे हमारे स्कूलों में नामांकन का स्तर बहुत बढ़ सकता है। इस बात को समझने

में अधिकारियों को समय नहीं लगा और इस दिशा में योजनाबद्ध रूप से काम करना आरम्भ किया गया, जिसमें फ़ाउण्डेशन द्वारा अपना पूर्ण सहयोग दिया गया।

ऑफ़लाइन माध्यम से शिक्षण की प्रयोगात्मक शुरुआत

इस पहल के अन्तर्गत, ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा को जारी रखते हुए, ऑफ़लाइन माध्यम से शत प्रतिशत बच्चों तक पहुँचने की योजना बनाने की शुरुआत की गई। एक प्रयोग के तौर पर इस पहल की शुरुआत ऊधम सिंह नगर ज़िले के काशीपुर ब्लॉक में कार्यरत उप-शिक्षा अधिकारी और फ़ाउण्डेशन के सदस्यों द्वारा मिलकर की गई। इस प्रक्रिया में सभी शिक्षक स्वैच्छिक रूप से जुड़े थे। इस पायलटिंग से यह समझ में आया कि जहाँ बहुत कोशिश करने के बाद भी हम ऑनलाइन माध्यम से केवल 20 से 25 प्रतिशत बच्चों तक ही पहुँच बना पा रहे थे, और उसमें भी केवल 13-14 प्रतिशत बच्चों के साथ ही निरन्तर संवाद हो पा रहा था, वहाँ अब ऑफ़लाइन माध्यम का प्रयोग करते हुए, इस ब्लॉक में एक हफ़्ते में 70 से 75 प्रतिशत विद्यार्थियों तक पहुँच बनाने में सफलता मिली थी। इस पहल की सफलता के आधार पर अब इस प्रक्रिया को ज़िला स्तर पर लागू करने का प्रयास किया गया।

ऑफ़लाइन माध्यम से शिक्षण की ज़िलास्तरीय योजना और क्रियान्वयन

ज़िला स्तर पर इस प्रक्रिया की शुरुआत करने के लिए सबसे पहले ज़िला अधिकारी और ज़िले के मुख्य शिक्षा अधिकारी के सहयोग से सभी सातों ब्लॉक के उप-शिक्षा अधिकारी और ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्र संकाय का ऑनलाइन माध्यम (माइक्रोसॉफ़्ट टीम्स एप) से अभिमुखीकरण (ओरिएंटेशन) किया गया और फिर इसी माध्यम से प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक तक बीस बैचों में ज़िले के शत प्रतिशत शिक्षकों (4446 शिक्षक) का अभिमुखीकरण किया गया।

शिक्षकों की अभिमुखीकरण प्रक्रिया के दौरान उनके साथ काशीपुर ब्लॉक में ऑफ़लाइन प्रक्रिया की पायलटिंग की जानकारी साझा की गई। इस प्रक्रिया को मुख्य रूप से तीन चरणों में क्रियान्वित किया गया था :

1. भौगोलिक रूपरेखा तैयार करना : इस प्रक्रिया के अन्तर्गत संकुल समन्वयकों द्वारा शिक्षकों के सहयोग से ऐसे बच्चों की पहचान की गई, जो ऑनलाइन प्रक्रिया में जुड़ने में असमर्थ थे।

2. विद्यार्थियों का वर्गीकरण : इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर के आधार पर उनको वर्गीकृत किया गया, ताकि बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया की योजना बनाई जा सके और उसी के अनुसार विद्यार्थियों के साथ शिक्षण प्रक्रिया में जाया जा सके। इससे पहले ऑनलाइन प्रक्रिया में, कक्षा अनुसार सभी शैक्षिक स्तर के बच्चों के लिए एक ही तरह की शिक्षण सामग्री व्हाट्सएप, ज़ूमकॉल, यूट्यूब, टीवी चैनलों आदि माध्यमों से साझा की जा रही थी और एकतरफ़ा संवाद किया जा रहा था। इससे बच्चों और शिक्षकों, सभी को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। न तो शिक्षक ही बच्चों से जुड़ पा रहे थे और न बच्चे ही कुछ समझ पा रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे यह प्रक्रिया केवल करनेभर के लिए ही की जा रही है।

3. शिक्षण सामग्री की तैयारी, वितरण और विश्लेषण : इस प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षकों की मदद से बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण सामग्री जैसे– नोट्स और वर्कशीट आदि को तैयार किया गया और शिक्षकों, अभिभावकों एवं भोजन माताओं की मदद से इस सामग्री को बच्चों तक पहुँचाया गया। साथ ही बच्चों को लिखने के लिए सामग्री, जैसे– कॉपी, पेंसिल, रबड़, शार्पनर आदि की व्यवस्था भी की गई। इस बात का ध्यान रखते हुए कि अभी बच्चों के पास उनकी पाठ्यपुस्तकें नहीं हैं, और अगर छात्रों को पाठ्यपुस्तकें मुहैया भी कराई जाती हैं तो भी पाठ्यपुस्तकों की भाषा को समझने में छात्रों

को मुश्किल आती है, इसलिए पाठ्यपुस्तकों के पाठों पर ही शिक्षकों द्वारा आसान भाषा में नोट्स तैयार किए गए और उन नोट्स के आधार पर वर्कशीट तैयार करके इस सामग्री को छात्रों तक पहुँचाया गया। इस प्रक्रिया में शिक्षक व्यक्तिगत रूप से ऑफ़लाइन माध्यम से हफ़्ते में एक बार छात्रों को नोट्स और वर्कशीट पहुँचाते हैं। छात्र नोट्स में देखकर अपना काम अपनी-अपनी कॉपी में करते हैं और साथ ही अपनी वर्कशीट पर भी कार्य करते हैं। सभी वर्कशीटों पर शिक्षक का नाम और फ़ोन नम्बर भी दर्ज किया गया, ताकि किसी भी तरह की दिक़्क़त या परेशानी आने पर छात्र फ़ोन के द्वारा शिक्षक की मदद ले सकें। एक हफ़्ते के बाद अभिभावकों या भोजन माता की मदद से छात्रों से वर्कशीट ले ली जाती है और उनको नए नोट्स और वर्कशीटें दे दी जाती हैं। छात्रों द्वारा काम की गई वर्कशीट को शिक्षक के द्वारा विश्लेषण करके, हफ़्तेभर बाद फिर अभिभावकों / छात्रों को लौटा दिया जाता है। इसी प्रकार यह प्रक्रिया निरन्तर चल रही है।

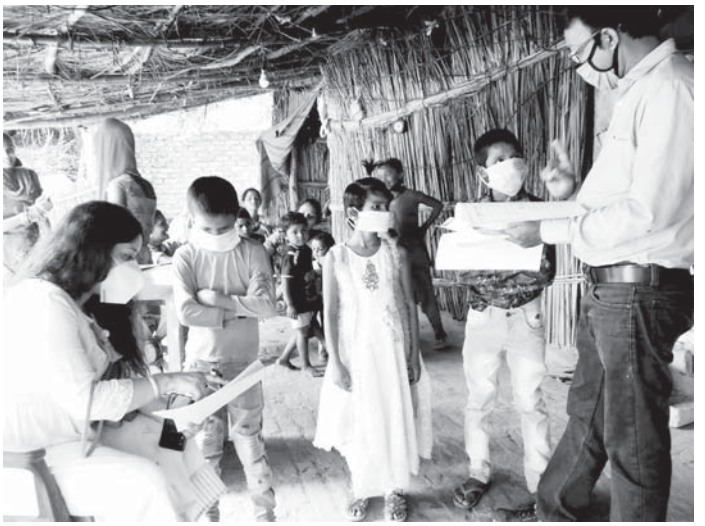

इस अभिमुखीकरण के बाद आधिकारिक रूप से सभी ब्लॉक में उप-शिक्षा अधिकारियों की मदद से फ़ाउण्डेशन के सदस्यों द्वारा कक्षा और विषय के अनुसार शिक्षकों का चुनाव किया गया। कोविड-19 के समय में सुरक्षा का ख़्याल रखते हुए छोटे-छोटे समूहों में अलग-अलग तिथि और समय पर शिक्षकों का वर्कशीट के बारे में अभिमुखीकरण किया गया और शिक्षकों के साथ मिलकर पहले हफ़्ते के लिए वर्कशीट का निर्माण किया गया। इस प्रकार पिछले तीन हफ़्तों में ज़िला स्तर पर तीन बार ऊपर लिखी प्रक्रिया को अपनाया जा सका है, जिसके द्वारा 90 प्रतिशत से अधिक छात्रों तक पहुँच बनाने में सफलता पाई जा सकी है।

एक ज़िम्मेदार शिक्षक के तौर पर बच्चों की शिक्षा के लिए अधिक-से-अधिक तरीक़े और नवाचार अपनाने की बात की गई। यह प्रक्रिया ज़िला प्रशासन और शिक्षा विभाग द्वारा प्रत्येक शिक्षक के लिए अनिवार्य की गई। इस प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप से करने और बच्चों के साथ किए गए प्रत्येक कार्य का ब्योरा / रिकॉर्ड रखने और इसका दस्तावेज़ीकरण करने के भी आदेश दिए गए, ताकि स्कूल खुलने के बाद भी इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विद्यार्थियों के साथ कक्षा शिक्षण को आगे बढ़ाया जा सके।

ऑफ़लाइन शिक्षा व्यवस्था हेतु अपनाई जाने वाली अन्य प्रक्रियाएँ

- ### ऑफ़लाइन और ऑनलाइन वर्कशीट निर्माण कार्यशाला

इस प्रक्रिया को अकादमिक तौर पर सुचारु रूप से चलाने के लिए वर्कशीट निर्माण पर बेहतर समझ विकसित करने हेतु अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा हाइब्रिड मोड में दो दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके लिए प्रत्येक ब्लॉक में विषयवार शिक्षकों का चुनाव किया गया, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक ब्लॉक से 12 से 15 शिक्षक चुने गए, जो अपने विषयों में बेहतर समझ रखते थे। पहले दिन ब्लॉक संसाधन केन्द्र में कार्यशाला की गई, जिसमें शिक्षकों से विषयों

के सैद्धान्तिक पक्षों और बच्चों के स्तर आदि पर चर्चा करते हुए अलग-अलग विषयों पर वर्कशीट का निर्माण किया गया और दूसरे दिन ऑनलाइन माध्यम से शिक्षकों और संकुल समन्वयकों के साथ बातचीत करके, इन वर्कशीटों को प्रत्येक शिक्षक के द्वारा प्रत्येक बच्चे तक पहुँचाने की योजना बनाई गई। अब प्रत्येक हफ़्ते के आख़िरी दिन सभी ब्लॉकों में स्थित फ़ाउण्डेशन के सदस्यों की मदद से चयनित शिक्षकों द्वारा अपने-अपने ब्लॉक में बैठक करके अगले हफ़्ते के लिए विषयवार वर्कशीट का निर्माण किया जाता है और बच्चों द्वारा वर्कशीट पर किए गए कार्यों पर बातचीत करके इनका विश्लेषण किया जाता है और आवश्यकतानुसार इसे पहले से बेहतर करने का प्रयास किया जाता है।

वर्कशीट निर्माण पर शिक्षकों की बेहतर सैद्धान्तिक और व्यवहारिक समझ विकसित करने के लिए फ़ाउण्डेशन के सदस्यों और शिक्षकों द्वारा सन्दर्भ व्यक्ति की भूमिका निभाते हुए, सभी विषयों पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन भी किया गया।

● साप्ताहिक वार्ता

इस प्रक्रिया के अन्तर्गत ब्लॉक स्तर पर प्रत्येक शिक्षक के द्वारा ऑनलाइन माध्यम का उपयोग करते हुए ऑफ़लाइन शिक्षा प्रक्रिया से सम्बन्धित अपने अनुभव और बच्चों की स्थिति को साझा किया जाता है और इसी के आधार पर वर्कशीट निर्माण व आगे की योजना बनाई जाती है।

इस प्रक्रिया की सफलता को देखते हुए ज़िला स्तर पर आधिकारिक रूप से ऑफ़लाइन शिक्षण प्रक्रिया को ही आगे बढ़ाया जा रहा है। जब तक स्कूल नहीं खुलते, यही प्रक्रिया जारी रहेगी। इस प्रक्रिया में लगातार अधिकारियों और शिक्षकों के सम्पर्क में रहने के कारण फ़ाउण्डेशन को ज़िला स्तर पर सभी के साथ बेहतर अकादमिक और व्यवस्थागत सम्बन्ध स्थापित करने में मदद मिल रही है। इसके साथ ही अधिकारीगण और शिक्षक भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि इस प्रक्रिया ने उनकी अकादमिक समझ को विकसित करने में सहयोग किया है और बच्चों के सन्दर्भों व पृष्ठभूमि को समझने में मदद की है, एवं अभिभावकों और समुदाय के साथ बेहतर सम्बन्ध स्थापित करने में सहयोग किया है, जिसके सकारात्मक परिणाम निकट भविष्य में मिलने की सम्भावना है।

मौअज़्ज़म अली 1993 से थिएटर, ड्रामा और कला के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आपने नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा के थिएटर इन एजुकेशन में कलाकार के रूप में काम किया है। फ़िलहाल 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में स्रोत व्यक्ति के रूप में जुड़े हुए हैं।

सम्पर्क : mozzam.ali@azimpremjifoundation.org